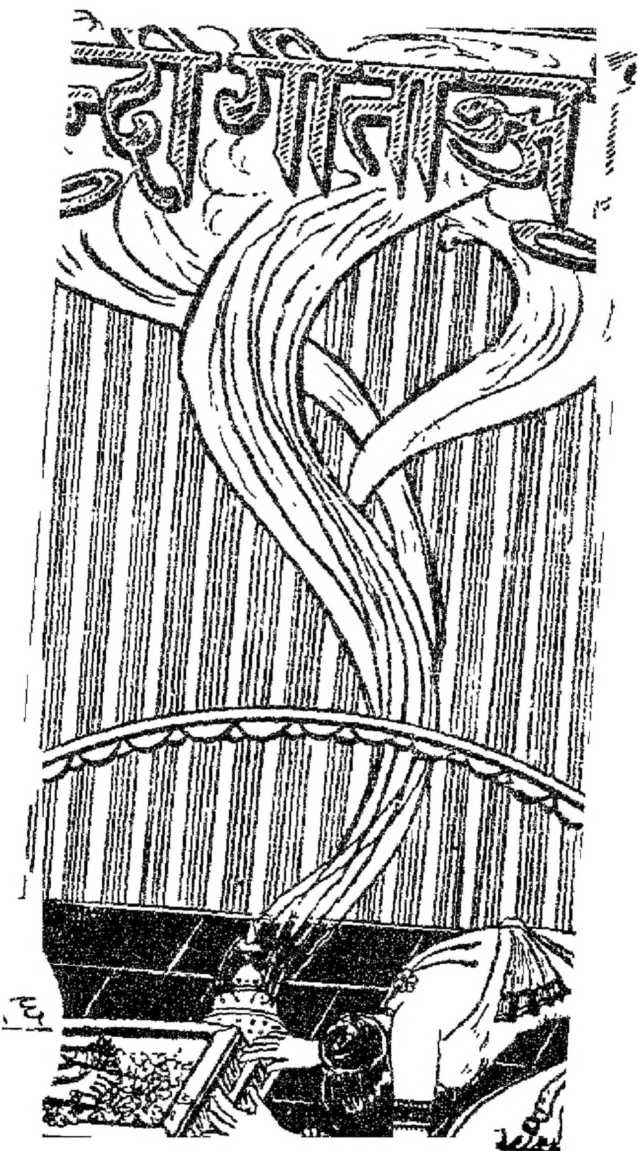


गीताञ्जलि



महाकवि सर रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जगत्प्रसिद्ध पुस्तक 'गीताञ्जलि' का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक,

महाशय काशीनाथ

प्रकाशक,

वैद्य शिवनारायण मिश्र भिषग्रत्न

प्रकाश पुस्तकालय,

कानपुर



दूसरी बार] [डेढ़ रुपया

वैद्य शिवनारायण मिश्र भिषग्रत्न द्वारा
प्रकाश औषधालय के
प्रकाश प्रिंटिंग प्रेस कानपुर में मुद्रित

निवेदन

वर्तमान भारतीय साहित्यिकों में डाक्टर सर रवीन्द्र नाथ का
न सबसे ऊँचा है। अर्वाचीन भारतीय कवियों में केवल आपकी
भा के सामने सारे देश ने ही नहीं, किन्तु सारे संसार ने सिर झुकाय
"आँख की किरकिरी", "नौका डूबी", "गोरा", "घर बाहर" आदि
न्यासों ने "नैवेद्य", "खेया" आदि काव्य ग्रन्थों, "रक्तकरवी",
कधारा" आदि नाटकों और अनेक लेखों और अख्यायिकाओं द्वारा आपने
हित्य का उपकार किया है। पर वह ग्रन्थ जिसने आप को संसार भर
सिद्ध कर दिया, जिसके कारण आप को सवा लाख रुपये का नोबिल
ज़ नामक पारितोषिक मिला, जिस पर ईट्स, रायेन्सटेन और एन्ड्रयूज
महानुभाव मुग्ध हो गये, और जो आपके सारे ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ
गया है, वह है "गीताञ्जलि"। हमने बँगला गीताञ्जलि की
ना अँग्रेजी गीताञ्जलि से की है। हम कह सकते हैं कि कई अंशों
अँग्रेजी गीताञ्जलि बँगला गीताञ्जलि से बढ़ी चढ़ी है। यह पुस्तक
गीताञ्जलि का हिन्दी अनुवाद है। रवीन्द्र बाबू बंगाली है
बँगला साहित्यसेवी हैं। पर आपकी अँग्रेज़ी बड़ी अलंकृत और
त्कारिक है। उसे देखकर आप नहीं कह सकते कि वह एक बं
रेज लेखक की भाषा नहीं है। फिर, रवीन्द्र बाबू की लेखनशैली
चटपटी और अलंकार पूर्ण होती है। मुहावरों की तो झड़ी बँ

जाती है। ऐसी भाषा का हिन्दी उल्था करना सहज नहीं। एक तो सूक्ष्म भावों के लिए हिन्दी में शब्द कठिनता से मिलते हैं, दूसरे वर्तमान लेखक भाषा पर प्रभुत्व रखने का दावा नहीं कर सकता।

अन्य महाकवियों की तरह रवीन्द्र ने भी अलंकार, उपमा और रूपकों का बहुतायत से प्रयोग किया है। यह प्राकृतिक दृश्यों से; घनघोर घटा, अँधेरी रात, रमणीय प्रभात, सुन्दर सूर्योदय इत्यादि से; प्रेमी प्रेमिकाओं के हाव भावों से, अन्य सांसारिक व्यवहारों से और विशेषतः गान वाद्य से (याद रहे कि रवीन्द्र बाबू महाकवि ही नहीं, किन्तु महागायक भी हैं) लिये गये हैं। इनको साधारणतः समझ लेना तो किसी साहित्य-प्रेमी के लिए कठिन न होगा पर इनके गूढ़ अभिप्रायों का ठीक ठीक पता लगाना टेढ़ी खीर है। इनके अनेक अर्थ हो सकते हैं। संभव है कि जो अभिप्राय हमने समझा, वह कवि का अभिप्राय न हो। सम्भव है कि कवि का अभिप्राय इतना उच्च और गुप्त हो कि वहाँ तक पहुँचना हमारी शक्ति के बाहर हो। अपने को कवि की स्थिति में—मानसिक अवस्था में—रक्खे बिना आप कवि के भाव पूर्णतया नहीं समझ सकते। रवीन्द्र की मानसिक अवस्था तक पहुँचना सबके लिए संभव नहीं। उनकी बहुत सी मानसिक अवस्थाओं को चित्त में लाना भी शायद असंभव हो। यह एक ऐसी कठिनता है जिस से महाकवियों के पाठक और अनुवादक अच्छी तरह परिचित हैं। कुछ ऐसे गीत हैं जो कवि ने अपनी निराली ही तरंग में लिखे हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन सब बातों के कारण अनुवाद करने में बड़ी कठिनाइयाँ पड़ी हैं। हमने प्रयत्न किया है कि गीतों के भाव पाठकों की समझ में आजायँ। न तो बँगला और न अँग्रेज़ी "गीतांजलि" में ही गीतों के शीर्षक दिये हुए हैं। हमने

प्रत्येक गीत का ऐसा शीर्षक बनाने का प्रयत्न किया है जो गीत के आन्तरिक भाव को प्रकट करता हो और जिसकी सहायता से पाठकों को सारा गीत समझने में सुविधा हो। आज कल [illegible] में तो इसका विचार करना पड़ा है।

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि पाठक इन गीतों को एक बार नहीं, दो बार नहीं, कई बार पढ़ें। भिन्न भिन्न समयों और भिन्न भिन्न अवस्थाओं में पढ़ें, तभी वे पूरा आनन्द और लाभ उठा सकेंगे। सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ी कवि मि० ईट्स इन गीतों के विषय में लिखते हैं:—"इनको मैंने यात्रा में बहुत दिनों तक अपने साथ रक्खा है। मैंने इनको रेलगाड़ियों में, घोड़ागाड़ियों में और होटलों में पढ़ा है। पढ़ते पढ़ते मैं बहुधा ऐसा उत्तेजित होगया हूँ कि उत्तेजना को छिपाने के लिए मुझे पुस्तक बन्द कर देना पड़ी है।"

प्रभात का वर्णन करने वाले एक गीत को आप एक बार अपने कमरे में बैठ कर पढ़िये। दूसरी बार उसी गीत को प्रभात के समय नदी के किनारे या जंगल के पेड़ों के नीचे या गाँव के खेतों में टहल टहल कर पढ़िये, आपको भेद मालूम हो जायगा। किसी गीत के प्रथम बार पढ़ने से जो प्रभाव मन पर पड़ेगा वह तीसरी या चौथी बार पढ़ने के प्रभाव के सामने फीका जान पड़ेगा। शोक या चिन्ताग्रस्त मस्तिष्क में जो भाव उत्पन्न होंगे वह प्रफुल्ल चित्त पर उत्पन्न होने वाले भावों से भिन्न होंगे।

इसी प्रकार पढ़ते पढ़ते सब गीतों के आन्तरिक अभिप्राय में प्रवेश होना सम्भव है। यह कहना अत्युक्ति न होगी कि बहुधा गीत के आन्तरिक भाव इतने छिपे रहते हैं कि सहसा उनका ध्यान भी नहीं आता। पर जब एक बार उनका पता लग गया तब सारे गीत में विचित्र आनन्द आने लगता है। उदाहरण देखिये।

छठवें गीत में कवि ने अपने जीवन को एक छोटा तुच्छ फूल माना है। वह परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करे।

आठवाँ गीत कृत्रिमता और बाह्याडम्बर की निन्दा करता है। सज धज और नाम धाम के मनुष्य सब कहीं नहीं जा सकते, सब तरह के लोगों से बात चीत नहीं कर सकते, अपने संकुचित क्षेत्र के बाहर पैर नहीं रख सकते और इसलिये उनके जीवन का पूर्ण विकास नहीं होता।

तेतीसवाँ गीत बतलाता है कि प्रलोभन कैसी चालाकी से हृदय में प्रवेश करते हैं और फिर अवसर पाकर अपना पूरा अधिकार कैसे जमा लेते हैं।

पैंतीसवें गीत में एक आदर्श समाज का चित्र खींचा गया है।

बासठवें गीत में कवि कहता है कि बालक के द्वारा प्रकृति—परमेश्वर—का रहस्य कैसे समझ में आता है। रंग बिरंगे खिलौने देख कर बालक प्रसन्न होता है, इसलिये पिता उसे रंग बिरंगे खिलौने देता है। इसी प्रकार परमेश्वर ने जगत को प्रसन्न करने के लिए मेघ, जल और फूलों को रंग बिरंगा कर दिया है।

दो चार गीत ऐसे भी हैं जो केवल कवियों या महात्माओं पर लागू हैं, और जिनका साधारण जनों से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं।

इक्यासीवें गीत में कवि कहता है कि मैंने बहुधा समय के नाश पर पश्चात्ताप किया है पर वास्तव में समय कभी व्यर्थ नष्ट ही नहीं हुआ। सम्भव है कि यह कथन कवियों के विषय में ठीक हो, पर औरों के विषय में ठीक नहीं हो सकता।

गीतांजलि में अनेक प्रकार के गीत मिलेंगे। ४, ६, ३९, ३५ ३६, ३९, ७९, और १०३ संख्या के गीतों में परमेश्वर से प्रार्थना की गई है।

२, ३, ७, १३, १५, १६, ४९ और १०१ संख्या के गीतों में गाने बजाने की भाषा का प्रयोग किया गया है। जैसा कि हम कह चुके हैं, रवीन्द्र बाबू बड़े भारी गायक हैं और इसलिये कोई आश्चर्य नहीं कि प्रार्थना, प्राकृतिक दृश्य, जीवन-मरण, बन्धन मोक्ष आदि सब ही विषयों में आपने गाने बजाने की भाषा का समावेश कर दिया है।

१६, २२, ४०, ४८, ५३, ५७, ५९, ६१, ६८ और ८० संख्या के गीतों में प्राकृतिक दृश्यों का अच्छा वर्णन है।

कवियों की दृष्टि सौन्दर्य पर बड़ी जल्दी जा पड़ती है। जहां साधारण नेत्रों को कोई मनोहरता नहीं दिखलाई पड़ती, या कुरूप ही कुरूप दिखलाई पड़ता है, वहाँ कवि के नेत्र सौन्दर्य ढूँढ निकालते हैं।

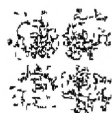
३, १२, १६, ४१, ५३, ४६, ५६, ६६, ६९, ७१, ८७, ९९ और १०० संख्या के गीतों में (Mysticism) अलौकिकता, गूढ़ता, रहस्ययुक्तता की झलक है।

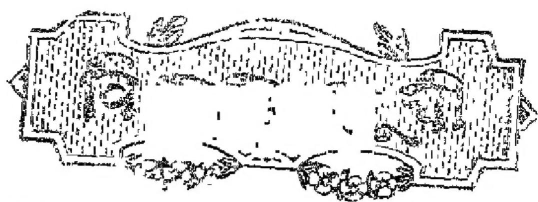
कवि अपनी आत्मा को सर्वव्यापी आत्मा में मिला देना चाहता है। ब्रह्मलय की दृष्टि से वह जीवन, मरण, देश, काल आदि पर विचार करता है। उसके लिए मृत्यु कोई भयंकर दुखप्रद-वस्तु नहीं। वह तो अनन्त जीवन में प्रवेश करने का द्वार है। अनन्त के साथ विवाह करने की रस्म है। ब्रह्म के पास जाने, ब्रह्म में मिल जाने क

जाता है। यही कारण है कि आप को रवीन्द्र बाबू की कविता में मृत्यु और परलोक की प्रशंसा के बहुत से गीत मिलेंगे।

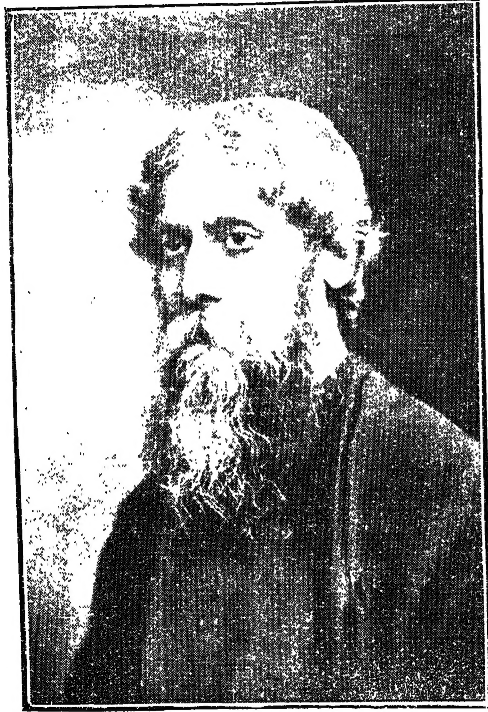
आशा है कि जो महाशय बंगला या अँग्रेज़ी जानते हैं उनको इस हिन्दी अनुवाद से उन भाषाओं की गीतांजलि के समझने में सहायता मिलेगी।

हम दीनबन्धु सी. एफ़. एंड्रूज़ महोदय के हृदय से कृतज्ञ हैं जिनके प्रयत्न से महाकवि ने गीतांजलि के हिन्दी रूपान्तर के प्रकाशित करने की आज्ञा दी है।









महाकवि सर रवीन्द्रनाथ ठाकुर

प्रकाश प्रेस,